FOR BLIS STUDENTS

Course : - Bachelor of Library and Information Science

(BLIS)

Paper : - Paper-I

Prepared By: - Aftab Ahmad, Assistant Librarian, Faculty Library Science
School of Library and Information Sciences, Nalanda Open University

Topic: - Digital Library

CONTENTS

15.1 Meaning and Definition
15.2 Need
15.3 Merits
15.4 Objective and characteristics
15.5 Basic Components
15.6 Summery

Scanned with CamScanner

15.2 अर्थ एवं परिभाषा (Meaning and Definition)

इलेक्ट्रॉनिक सूचना तकनीक के विकास एवं आधुनिकीकरण के फलस्वरूप नवीन एवं द्रुतगति सम्पन्न संचार साधनों का विकास हुआ है। द्रुतगति सम्पन्न संचार साधनों के विकास ने सूचनाओं के एकत्रीकरण एवं सम्प्रेषण को परिवर्तित किया, फलस्वरूप आज लाइब्रेरी भण्डारगृह से परविर्तित होकर शक्तिगृह का रूप ले लिया है। (Store House of Powerhouse) एवं इस परिवर्तन के कारण आज लाइब्रेरी व्यवसायिकों को भी परम्परागत लाइब्रेरी सिस्टम से डिजिटल लाइब्रेरी सिस्टम के प्रति विवशत: आकृष्ट होना पड़ा। डिजिटल लाइब्रेरी सिस्टतम गत एक युग से भी अधिक समय से सम्पूर्ण विश्व में व्याप्त है। इस प्रणाली से कोई भी व्यक्ति (छात्र, अनुसन्धानकर्त्ता, अध्यापक आदि) अपने कार्यस्थल या कोई भी स्थान पर बैठकर कम्प्यूटर के माध्यम से वांछित सूचना प्राप्त एवं एकत्रित कर सकता है। डिजिटल लाइब्रेरी की सेवा एवं सुविधा मुख्यत: कम्पयूटर, संचार साधनों की उपलब्धता, उपकरण, साफ्टवेयर, हार्डवेयर आदि तथा लाइब्रेरी व्यवसाय से जुड़े कर्मियों के ज्ञान, कुशलता एवं आधुनिक तकनीक के प्रयोग में उनकी दक्षता पर निर्भर है।

डिजिटल लाइब्रेरी का अर्थ सामान्य रूप से एक कम्प्यूटराइज्ड सिस्टम है जिसके द्वारा प्रयोक्ता सुसंगत रूप से इलेक्ट्रॉनिक रूप से एकीकृत एवं संगठित सूचना भण्डार तक पहुँच सके एवं उसे जान सके। इस लाइब्रेरी का तात्पर्य उस इलेक्ट्रॉनिक लाइब्रेरी से है जिसमें सूचनाओं का संग्रहण डिजिटल या तुल्यरूप आकार से किया गया हो।

डिजिटल संसाधनों का यह लाइब्रेरी ऐसा है जो कम्प्यूटर में स्टोर, संगठित एवं निर्बाध रूप से प्रदर्शित किया जा सकता है। अत: संक्षेप में डिजिटल लाइब्रेरी का आशय उस कम्प्यूटराइज्ड नेटवर्किंग से है जिसमें सूचनायें इलेक्ट्रानिक प्रारूप में संग्रहित, अवलोकन एवं एक साथ विस्तृत क्षेत्रों में फैले हुए विशाल संख्यक प्रयोक्ताओं को नेटवर्क के माध्यम से संप्रेषित किया जा सकता है।

विलफोर्ड लीन्च के अनुसार डिजिटल लाइब्रेरी एक ऐसा कम्प्यूटराइज्ड सिस्टम है जिसके द्वारा विस्तृत क्षेत्र में फैले हुए समस्त प्रयोक्ताओं को विशाल एवं संगठित रूप से सुरक्षित एवं संग्रहित सूचनाओं एवं ज्ञान की जानकारी सुसंगत रूप से उपलब्ध हो।

ए. एन. यर्की ने डिजिटल लाइब्रेरी को परिभाषित करते हुए कहा है कि यह एक इलेक्ट्रानिक लाइब्रेरी है जिसके माध्यम से भौगोलिक रूप से फैले हुए प्रयोक्तायें डिजिटल रूप से संग्रहित भण्डार से समस्त सूचना एवं ज्ञान की जानकारी प्राप्त कर सकें।

Scanned with CamScanner

इस प्रकार उपरोक्त परिभाषाओं के आधार पर डिजिटल लाइब्रेरी का आशय यह है कि यह लाइब्रेरी भी उसी उद्देश्य, कार्य एवं लक्ष्य को पूर्ण करती है जो परम्परागत लाइब्रेरी करती है। संग्रह विकास एवं प्रबंधन, विषय विश्लेषण, सूची, प्रयोक्ताओं की अभिगम को संतुष्ट करना, प्रयोक्ताओं की पहुँच या अवलोकन या प्राप्ति सुलभ करना, सन्दर्भ, संरक्षण आदि समस्त कार्य जो परम्परागत पुस्तकालय सम्पन्न करती है। परम्परागत पुस्तकालय से अन्तर मात्र यह है कि सिस्टम में यह डिजिटल प्रारूप में संग्रहित एवं उपलब्ध रहता है जिसे प्रयोक्ता कभी भी किसी समय अपने कार्यस्थल या अन्यत्र पर बैठकर सूचना प्राप्त कर सकता है।

15.3 आवश्यकता (Need)

अभिलेख का पाठ्य सामग्री जो परम्परागत पुस्तकालय में संग्रहित किये जाते हैं, उसके बहुत शीघ्र जीर्ण-शीर्ण एवं नष्ट हो जाने का भय रहता है। इसके संग्रहण, भण्डारण एवं संरक्षण अत्यन्त व्यय-साध्य है तथा इस हेतु अनेक समान की आवश्यकता होती है। हमारे देश में ही अनेक स्थानों में प्राकृतिक कारणों से अभिलेखों एवं पाठ्य-सामग्रियों को बहुत अधिक समय तक संरक्षित किया जाना संभव नहीं है। अत: आज समस्त पुस्तकालय एवं अभिलेखागारों द्वारा अपने पाठ्य सामग्रियों एवं अभिलेखों को डिजिटल प्रारूप में डिजिटल लाइब्रेरी हेतु संग्रहित एवं संरक्षित किया जा रहा है।

डिजिटल तकनीक के प्रयोग का महत्त्वपूर्ण आवश्यकता एवं कारण यह भी है कि करोड़ों लाइन की पाठ्य सामग्री, हजारों इमेज एवं सैकड़ों आडियो क्लिप्स को डिजिटल प्रारूप में अत्यन्त सहजतापूर्वक संग्रहित एवं संगहित कर प्रयोक्ताओं को सेवा प्रदान किया जाना संभव हो सकता है। अपनी वांछित सूचनाओं को खोजना परम्परागत पुस्तकालय में अत्यन्त कठिन होता है जबकि प्रयोक्ता द्वारा डिजिटल लाइब्रेरी में खोज अपनी आवश्यकतानुसार अत्यन्त सहजापूर्ण करने में सक्षम होता है।

15.4 लाभ (Merits)

डिजिटल लाइब्रेरी से निम्न लाभ हैं

(i) बिना समय गँवाये सूचनाओं को तुरन्त प्राप्त करने में सहयता प्रदान करना,

(ii) प्राप्त डाटा विश्वसनीय एवं गुणवत्ता का होता है।

(iii) स्थान में कमी करना।

(iv) संचार एवं इन्टरनेट कार्य में त्वरित गति।

(v) सूचना के व्यावसायीकरण की सम्भावना में वृद्धि।

(vi) ज्ञान वृद्धि की सम्भावना।

(vii) विश्वव्यापीकरण पर बल।

(viii) संसाधन सहभागिता में वृद्धि आदि अनेक लाभ हैं।

15.5 उद्देश्य एवं विशेषताएँ (Objective and Characteristics)

डिजिटल लाइब्रेरी एक ऐसा कम्प्यूटराईज्ड नेटवर्क प्रणाली है जिसमें समस्त सूचनायें इलेक्ट्रॉनिपक प्रारूप में भरा या एकित्रत रहता है, जिसे प्रयोक्ता (User) द्वारा अपने कार्य स्थल पर बैठे-बैठे जाना जा सकता है एवं आवश्यकतानुसार इन सूचनाओं को नेटवर्क के माध्यम से सम्प्रेषित किया जा सकता है। इसे एक साथ अनेक प्रयोक्ताओं द्वारा प्रयुक्त किया जा सकता है।

Scanned with CamScanner

डिजिटल लाइब्रेरी के उद्देश्य एवं विशेषतायें निम्नवत हैं–

(i) विभिन्न संचार चैनलों के माध्यम से सूचनाओं को डिजिटल प्रारूप में इकत्रित, संगठित एवं सम्प्रेषित किया जाना।

(ii) प्रयोक्ताओं को उनके आवश्यकतानुसार उत्तम सेवायें सुलभ करना।

(iii) प्रयोक्ताओं को दक्षतापूर्ण व्यक्तिगत एवं अनुदर्शी सेवा सुलभ करना।

(iv) विस्तृत एवं विशाल डिजिटाईज्ड डाटाबेस सुविधा प्रदान करना।

(v) पुस्तकालय कर्मियों के नैतिक प्रकृति के कार्य-समय का बचत करना।

(vi) एक लाइब्रेरी के अन्तर्गत किसी भी प्रारूप में समस्त सूचनाओं को सुसंगत रूप से उपलब्ध कराना।

(vii) नेटवर्क के माध्यम से दूरस्थ एवं विस्तृत रूप से फैले हुए प्रयोक्ताओं को सेवा सुलभ कराना।

(viii) पुस्तकालयों के स्थानभाव एवं भण्डारण समस्याओं का समाधान।

(ix) पुस्तकालय कार्यों के व्ययों में कमी किया जाय।

15.6 मुख्य अवयव (Basic Components)

किसी भी डिजिटल लाइब्रेरी हेतु निम्नलिखित तकनीकी कन्फिगुरेशन की आवश्यकता है :

(i) अत्यन्त तीव्र लैन एवं इन्टरनेट कनेक्टिविटि।

(ii) विभिन्न डिजिटल प्रारूप हेतु आर डी बी एम एस (RDBMS) का रिपोर्ट।

(iii) अनुक्रमणिका हेतु सर्च इंजन एवं संसाधनों तक पहुँच।

(iv) इलेक्ट्रॉनिक प्रलेख प्रबन्धन कार्य जिसके द्वारा डिजिटल संसाधनों का सम्पूर्ण प्रबन्धन।

(v) इसके संरचना के लिए निम्न संसाधनों का होना :

- (a) बिब्लियोग्राफिक डेटाबेस
- (b) अनुक्रमणिका एवं खोज उपकरण
- (c) इन्टर संसाधनों के लिए पयन्टर (Pointers) का संग्रह
- (d) निर्देशिका, फोटोग्राफ, डेटासेट्स ई-जर्नल।

15.7 सारांश (Summing-Up)

प्रस्तुत पाठ में डिजिटल लाईब्रेरी की आवश्यकता एवं महत्व के बारे में चर्चा की गई है। वर्तमान समय में कम्प्यूटर तथा दूरसंचार माध्यमों के द्वारा सूचना का संग्रह, भंडारण, प्रक्रियाकरण, संचारण आदि होने लग रहा है। जिसके परिणामस्वरूप डिजिटल लाईब्रेरी की अवधारणा बनी। डिजिटल लाईब्रेरी के अन्तर्गत समस्त सामग्रियों को डिजिटल प्रारूप में संग्रहीत कर नेटवर्क के माध्यम से सूचना सेवा प्रदान की जाती है। इन्टरनेट के द्वारा एक साथ अनेक प्रयोक्ता सेवा प्रदान की जाती है। इन्टरनेट के द्वारा एक साथ अनेक प्रयेक्ता इसका उपयोग सरलता से कर सकता है। अत: डिजिटल लाईब्रेरी एक ऐसा लाईब्रेरी है जिसमें समस्त सूचना डिजिटल रूप में उपलब्ध हो। इसके माध्यम से छायाचित्र, आरेखन, पाठ्य, संख्यात्मक डेटा, डिजिटाइज्ड साउण्ड, होलोग्राम्स आदि सूचना प्राप्त की जा सकती है।

Scanned with CamScanner